Vol III Issue IX March 2014

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Volume-3 | Issue-9 | March-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

जैनेन्द्र के उपन्यास : स्त्री अंतर्द्वंद्व

राखी उपाध्याय , कुसुम

एसोसिएट प्रोफेसर
शोध छात्रा
हिन्दी विभाग, डी.ए.व. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून

सारांश :-अंतर्द्वंद्व एक हला सा एहसास है। जो शनैः शनैः व्यक्ति को सालता व मारता रहता है। जैनेन्द्र की हर एक नायिका इसी अंतर्द्वंद्व के घेरे में दृष्टकूट है। जिसमें से अधिकत्तर नायिकाएँ उपन्यास के अंत में बेजार सी दृष्टिगोचर होती है। एक स्त्री के जीवन में दो पुरुषों (पति और प्रेमी) की मौजूदगी इस अंतर्द्वंद्व का कारण है।

कुँजी शब्द : अंतर्द्वंद्व, यौन समस्या, प्रतिरोध की आकांक्षा, स्व–रक्षा का भाव, प्रताड़ना, पतिपरायणता की अति, अति आदर्शता, स्वंतत्र समर्थन का द्वंद्व।

प्रस्तावना :

मनुष्य अपने जीवन में अनेक सार्थक और निरर्थक कार्य करता है। अपनी इस जीवन यात्रा में कभी–कभी व्यक्ति दो ऐसे गहन पाटों के बीच फँस जाता है जहाँ वह सही–गलत का निर्णय नहीं कर पाता। अंतर्द्वंद्व की यह व्यथा ऐसे व्यक्ति के मन में उत्पन्न होती है जो समुचित विचार–सारणी को अपनाकर वस्तु–स्थिति को ठीक–ठीक समझ नहीं पाता। इसीलिए एक साधन या कार्यपद्धति पर उसका विश्वास दृढ़ नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में वह दोनों को लेकर चलता है लेकिन दोनों में से किसी को पूर्णता प्रदान करने में वह असफल हो जाता है। इस असफलता, निराशा, वचना व भावुकता के कारण उसके संपूर्ण व्यक्तित्व में अंतर्द्वंद्व की प्रति छाया व्यक्त होने लगती है। इसी अंतर्द्वंद्व की अपरम सीमा जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में उद्धृत हुई है।

जैनेन्द्र कुमार ने मनुष्य की अंतर्यात्रा को महत्त्व देकर उपन्यास लिखने की प्रवृत्ति का प्रवर्तन किया। उनकी आंतरिक आस्था मानव की गहन शक्ति पर है। स्वाभाविक रूप में इस मानसिकता के अंवेषण में अपनी सहज बुद्धि और अंतर्ज्ञान क्षमता के आधार पर ही आरंभ से चले। पाश्चात्य विद्वानों से प्रभावित जैनेन्द्र जी अंतर्द्वंद्व को मानव जीवन में अनिवार्य मानते हैं। वे द्वंद्व से विकास की प्रक्रिया स्वीकार करते हैं, क्योंकि द्वंद्व व्यक्ति को अनुभवशील बनाता है। भले ही भीतर वह वास्तविक हो जाता है। जैनेन्द्र जी ने अपने सभी उपन्यासों में स्त्री पात्रों के अंतर्जगत् का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। स्त्री की अनेक मानसिक विकृतियों, संवेदनाओं और अंतर्द्वंद्वों के चित्रण में उन्हें पर्याप्त सफलता मिली। जैनेन्द्र की समस्त स्त्री पात्र प्रेम और विवाह की द्वंद्वात्मक चेतना में अविभूत होती है। जैनेन्द्र कहते हैं – "विवाह और प्रेम के द्वंद्व में से तरह–तरह की समस्याएँ पैदा होती हैं। प्रेम मुक्त है। विवाह एक संस्कार और मर्यादा है।" प्रेम किसी संस्कार और मर्यादा को नहीं जानता, और विवाह इन दोनों से पूर्णतः परिचित ही नहीं बल्कि उमसें समाहित भी है। प्रेम किसी बंधन में नहीं बंधा है जबकि विवाह बिना बंधन के संभव नहीं। इसलिए द्वंद्व तो होगा ही।

जैनेन्द्र युग में स्त्री स्वातंत्र्य और परिवर्तित जीवन मूल्यों ने वैवाहिक आदर्शों में भी परिवर्तन प्रारंभ कर दिया था। फलतः जैनेन्द्र ने यौन नैतिकता के नये मूल्य स्थापित करने का प्रयास भी किया। अपनी स्त्री पात्रों के माध्य से उन्होनें शारीरिक संबंध को सामाजिकता तथा नैतिकता की सीमा से परे रखा। तथा उसे मानवता के सहज विकास की प्रवृत्ति के रूप में प्रदर्शित किया। इसी यौनाचार के कारण जैनेन्द्र की स्त्री पात्र प्रेमी के प्रति समर्पिता और पति की उदारवादिता से जूझते हुए, घर–बाहर की संघर्षात्मक समस्या से जुड़ जाती है। 'अनाम स्वामी' की वसुंधरा इसी संकट से घिरी है। वसुंधरा का पति कुमार बिमारी के चलते उसे यौन सुख देने में असमर्थ है लेकिन वह पत्नी में पूर्णता देखना चाहता है। अपने मित्र और वसुंधरा के प्रेमी उपाध्याय से वह अपने वंश की कामना भी रखता है। परंतु उपाध्याय वसुंधरा को वंश न देकर सिर्फ भोग के लिए इस्तेमाल करना चाहता है। इस स्थिति में वसुंधरा समझ नहीं पाती कि वह पति की इच्छा पूरी करे या प्रेमी की अंतरंगता में शामिल रहे। एक बार वह अपने प्रेम की ओर उद्यत् होती है लेकिन उसके पारंपरिक संस्कार उससे कहलवा ही देते हैं – "मैं तुम्हारी नहीं हूँ। उद्यत हुई हूँ, हाँ, पर उनकी खातिर कि जिनकी होकर में आई हूँ।" ऐसी ही स्थिति सुनीता की भी है। श्रीकांत कहता है कि उसकी पत्नी सुनीता उसके मित्र हरिप्रसन्न को वैराग्य से गृहस्थ जीवन की ओर मोड़े, ताकि उसका जीवन खुशहाल हो सके। श्रीकांत सुनीता और हरिप्रसन्न को अकेले छोड़ कुछ दिनों के लिए घर से चला जाता है, और पत्रों के माध्यम से सुनीता को कहता है कि वह खुद को अकेल समझे और सब कुछ हरिप्रसन्न की मर्जी से करे। पर सुनीता अपने साथ पति को चाहती है किसी अन्यत्र को नहीं। परंतु वह पति की आज्ञा की अवज्ञा भी नहीं करना चाहती और कहीं न कहीं वह हरिप्रसन्न की तरफ भी आकृष्ट होने लगती है– "जीवन में इतनी अवश सुनीता शायद कभी नहीं

हुई, मानों इस समय श्रीकांत के प्रति वह अपने को सर्वशः बहा देना चाहती है..... इस स्थिति में आकर वह उसी समय हरिप्रसन्न की तरफ जाने को उद्यत हुई कहेगी कि नहीं मैं नहीं जा सकूँगी" फिर भी स्त्री सामाजिक नियमों को दरकिनार कर अपने प्रेम को हृदय से संजोये रहती है। लेकिन वैवाहिक संबंधों के मध्य तृतीय आहत पक्ष (पर) का प्रवेश स्त्री के अंतर्द्वंद्व की समस्या को बढ़ाये रखने में सहयोगी सिद्ध होता है। त्रिकोणात्मक प्रेम की अटल गहराइयों में स्त्री किसी भी पुरुष को लेकर न तो डूब पाती है और न ही प्राप्त कर पाती है। वह पति और प्रेमी के मध्य आंतरिक भावनाओं से जूझती रहती है, सहती रहती है और टूटती रहती है। इस स्थिति से 'व्यतीत' की अनीता गुजरती है। उसका प्रेयसीत्व हर बार उस पर हावी हो जाता है। किसी की पत्नी होते हुए भी वह अपने प्रेमी की हर रूप में सहायत करती है, पर उसे सही राह पर नहीं ला पाती। जयंत का प्यार उसे अपनी ओर खिंचता है और सतीत्व के संस्कार उसे आगे बढाने से रोकते हैं। पति के प्रति वह विश्वासघात नहीं करना चाहती और प्रेमी के प्रति समर्पित होने से खुद की नजरों से भी नहीं गिरना चाहती। अतः वह जयंत से कहती है– "पूछती हूँ तुम अंधे हो? आँखों से देखते नहीं? मैं ब्याहता हूँ फिर क्या चाहते हो?..... तुम नहीं चाहते अनीता को। तुम पापिष्टा को चाहते हो।" अपने भीतर के द्वंद्व के कारण उसकी चेतना शून्य हो जाती है, वह जयंत को नोचती और झकझोरती है स्वयं भी उसकी दशा अस्त–व्यस्त हो जाती है। उसके इस व्यवहार से उसकी तीव्र मानसिकता और असीमित अंतर्द्वंद्व का पता चलता है। दूसरे दिन अनीता जयंत के समक्ष समर्पित हो जाती है। इस तरह दो राहों के मध्य वह खुद को असहज भी महसूस करती है– "जिसका परिणाम तनाव हो। दो तत्व परस्पर इस तरह अनुबद्ध हो कि उनमें विग्रह और आकर्षण हो तो द्वंद्व की अवस्था मानिये। उन दो सिरों के बीच संबंध इकराही नहीं है, दोराही आवागमन है।" जैनेन्द्र की हर स्त्री पात्र दो राहों पर खड़ी है, दोनों ही राहों से आवागमन की प्रक्रिया चल रही है, और वह सही राह तय नहीं पर पा रही और उन राहों से दृष्टि भी नहीं हटा पा रही है। 'विर्वत' की भुवनमोहिनी जानती है कि उसके प्रेमी का संबंध ट्रेन दुर्घटना से है, फिर भी उसकी बिमारी व अपने प्यार की खातिर वह क्राँतिकारी जितेन को पुलिस से बचाकर घर में पनाह देती है। जितेन के प्रति उसके मन में अब भी कहीं प्रेम छिपा हुआ है जो वक्त–बेवक्त जितेन की सेवा करते हुए व्यक्त होता रहता है। अपने पातिव्रत्य धर्म के खातिर वह अपने पति से कुछ छुपाना नहीं चाहती लेकिन भय और स्व–रक्षा का भाव उसे पति के सामने सच बोलने से डिगा देता है। प्रसिद्ध पाश्चात्य वैज्ञानिक युंग ने 'अचेतनात्मक प्रक्रिया' को विस्तार स्वरूप प्रदान किया है। उनका मानना है कि "मनुष्य में स्व–रक्षा ही प्रमुख प्रेरक–तत्व होता है।"

जैनेन्द्र के निकट मानव की मूल समस्या यह है कि व्यक्ति समाज में रहते हुए भी समाज से कटा हुआ है। तथा अपने पूँजीभूत अहं के कारण अपने में मग्न है। उसके भीतर 'पर' की ओर उन्मुख होकर समग्र में खोने की प्रवृत्ति नहीं है। यही कारण है कि उसे घोर मानसिकता सहनी पड़ती है। समाज के नाम पर उनका परिचय पति या पत्नी के किसी मित्र या प्रेमी से होता है। समस्या यह है कि जिससे प्रेम होता है उससे विवाह नहीं हो पाता और जिससे विवाह होता है उससे प्रेम नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में पति–पत्नी के बीच घोर संघर्ष चल सकता था पर जैनेन्द्र के नायक स्थिति को स्वीकार करके मानसिक संतुलन बिगड़ने नहीं देते। पत्नी को किसी और की तरफ प्रवृत्त होते देख पति उदार हो जाता है तथा 'विवर्त' के नायक नरेश की तरह पत्नी को ढ़ाढस बढ़ाते ही नजर आते हैं, "मुँह छिपाने की तुम्हारे लिए कोई बात नहीं। प्यार का हक सबका है अगर मैं सौ फीसदी तुम्हारा हूँ तो एक फीसदी भी मुझे अतिरिक्त गिनती में मत लो।" पर पति से आश्वासन पाकर भी जैनेन्द्र की स्त्री पात्राएँ और उलझन में पड़ जाती हैं। उनके अचेतन मन में पातिव्रत्य के परंपरागत संस्कार इतने गहरे धंसे हैं कि पति के प्रति उदासीन और प्रेमी के प्रति आकृष्ट होने की कल्पना तक से ही वे अपने को अपराधी पाती है। और लाख चाहने पर भी पति से अलग नहीं हो पाती। स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास की आकांक्षी सुखदा का विद्रोह पति द्वारा लाल के घर जाने की अनुमति देने पर कुण्ठित हो जाता है। वह कांत की सहिष्णुता में क्लीवता का दर्शन करती है। पति से अनुमति माँगने पर भी प्रतिरोध की आकांक्षा रखते हुए वह पति के अधिकार की सुरक्षा संबंधी दृष्टिकोण का प्रतिपादन करती हैं और सोचती है – "स्वामी ने प्रतिरोध नहीं किया। प्रतिरोध उन्हें करना चाहिए था। स्त्री को राह न देना उसे न समझाना है। गति वह उतनी नहीं चाहती जितनी स्वीकृति चाहती है। वह न आने पर पुरुष की ओर से निपट अनुगति आती है तो इस पर स्त्री का क्षोभ सीमा लांघ जाता है।" कर्म की स्वंतत्रता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पत्नीत्व की चाह पर भी वह मानसिक दृष्टि से पति के प्रतिरोध, स्वामित्व व बंधन की आकांक्षा करती है। पाश्चात्य स्वच्छंद जीवन दृष्टि से ग्रस्त होने पर भी उसकी अवचेतना में भारतीय नारी होने के नाते उस भारतीय पत्नी के संस्कार जाग्रत है जो पति का पूर्ण अधिकार पत्नी पर स्वीकार करती है। डॉ0 रामरतन भटनागर के विचारानुसार – "सुखदा नारी के बहिर्गमन की कहानी है। बाहर जाकर भी नारी मन की दहलीज नहीं लांघ पाती। यही तो विवशता है। बुद्धि जीतती है, हृदय रो देता है। नारी की यह द्वंद्व स्थिति 'सुखदा', में उभरी है।" यहाँ यह बात सुखदा के लिए कही गई है लेकिन जैनेन्द्र के हर उपन्यास इसी अंतर्द्वंद्व के घेरे में हैं। मृणाल का संबंध तो त्रिकोणीय नहीं है लेकिन उसका संघर्ष संपूर्ण समाज से है। मृणाल का विवाह उसके प्रेम से न होकर एक बड़े उम्र के व्यक्ति से हो जाता है। आदर्श पत्नी होने के कारण वह पति को अपने पूर्व प्रेमी के बारे में बताती है, लेकिन उसकी आदर्शता उसे घर से बेघर कर देती है। तत्पश्चात् वह एक कोयले वाले के साथ रहने लगती है। जब प्रसाद को अपनी बुआ का पता चलता है तो वह उसे लेने जाता है। वहाँ मृणाल उसे मना करते हुए कहती है– "मैं पति का घर छोड़कर आई हूँ। पति है पर दूसरे पुरुष के आसरे रह रही हूँ। तुम न जानो, मैं यह जानती हूँ। तुम अपने आँख ढंक लो लेकिन मुझसे अपना यह सारा पातक निगल जाने को नहीं कह सकते। पापिनी हो सकती हूँ पर उसके ऊपर क्या अकृतज्ञ भी बनूँ?" उसका सारा पतिव्रत धर्म व्याख्यान गहरी चोट, अपमान और अपेक्षा के आघात से तथा मायके के रिश्ते टूटने के दुःख से प्रभावित हैं। मृणाल बुरे वक्त में सहारा देने वाले व्यक्ति का साथ नहीं छोड़ना चाहती, जबकि वह जानती है कि एक दिन उसका जी मुझसे भर जाएगा और वह अपने परिवार के पास लौट जाएगा, फिर भी वह उसकी सेवा में तल्लीन रहती है। बाहर से सहज दिखने वाली मृणाल के भीतर द्वंद्व की लहरें उछाल मारती रहती हैं। जिससे वह खुद आहत होती है लेकिन किसी को भी इसका आभाष नहीं होने देती। मृणाल तो स्वावलंबी होने का प्रयास नहीं करती है लेकिन कल्याणी एक पढ़ी लिखी काबिल डॉक्टर थी। फिर भी हर दिन वह पति द्वारा प्रताड़ित होती है। आदर्श पत्नी बन वह इस प्रताड़ना को पति का प्यार कहती है। समाज के समक्ष उसने कभी खुद को कमजोर महसूस नहीं होने दिया, लेकिन अंतर्मन में वह इतनी बिखर चुकी है कि सोते–जागते उसे अपने आस–पास मृत व्यक्ति नजर आने लगते हैं। उसकी ये स्थिति गंभीर बिमारी का रूप ले लेती है। कल्याणी इस तन के बोझ को तो सह लेती है लेकिन मन की चिंता और तनाव को वह कब तक सकती। इस स्थिति में वह अपने मन की बात किसी से कह भी नहीं सकती। वह अपने अंतर्द्वंद्व की भीषणता को बखूबी पहचानती है इसलिए वह कहती है– "मेरे मन के भीतर का अंधेरा बाहर आएगा, तो वह तुमकों अच्छा नहीं लगेगा, उसे कुरेदने में क्या है? उसे मुंदा ही रहने दो।" जिस पति के खातिर कल्याणी ने अपने समाज सेवा का सपना सपना ही रहने दिया। खुद स्वावलंबी होने पर कभी कोई फैसला नहीं

किया जिस समाज में उसे मान मिलता था उसी के समक्ष पति द्वारा कलंकित कहे जाने पर भी जिसने पलटकर कभी जवाब न दिया। अनेक अत्याचार सहती रही लेकिन पति से अलग होने के बारे में सोचा तक नहीं फिर भी उस पति की तरफ से उसे प्यार और अपनापन नहीं मिला। उस कल्याणी के अचेतन में अंतर्द्वंद्व का होना हैरानी की बात नहीं है। उसके अंतर्द्वंद्व का अंत उसकी मौत के साथ ही होता है।

इला एक ऐसी पात्र है जिसे आदर्श प्रेमिका के रूप में दर्शाया गया है। जिसने जय का साथ कभी नहीं छोड़ा, हमेशा उसकी सहायता की। पिता द्वारा विवाह की आज्ञा न मिलने पर उसने जय से विवाह नहीं किया। लेकिन अविवाहित ही वह जय के साथ रही। इला में जो द्वंद्व है वह उसकी अतृप्त यौन भावना का द्वंद्व है। जिसकी वह खुद ही जिम्मेदार है इसलिए उसकी अंतर्द्वंद्व अति प्रवीण है। फिर भी वह एक सभ्य, मृदुल, सादगीपरक स्त्री है। उसकी द्वंद्वात्मकता का पता तब चलता है जब विलवर उनसे कई सवाल करता है तब इला की चेतना जागृत होती है और अंतर्मन में छुपे कई पहलू उजागर होते हैं। इला ने जय की समीपता को चाहते हुए भी अस्वीकार किया। बाहरी तौर पर वह कई सालों तक अपनी इस शुचिता पर अडिग रही लेकिन अचेतन में पनपे अंतर्द्वंद्व को वह रोक नहीं पाई। बीस वर्षों के सामीप्य में भी इला ने जय को कभी अपनी ओर अवश नहीं पाया है। केवल एक बार बीस वर्ष पहले ऐसा अवसर आया था जब वह इला के प्रति अवश हुआ था और इला का मन समूचेपन से बोल उठा – "लो, लो, मुझे लो .... तभी एक हल्का–सा परस मेरी उंगलियों को छू गया। सारे गात में एक साथ बिजली दौड़ गई और मैं वर्जन करती चिल्लाई, नहीं, नहीं, नहीं। ..... मैं अपेक्षा में रही कि कोई होगा जो मेरी 'नहीं' नहीं सुनेगा और मुझे ले ही लेगा। इस अपेक्षा को ही नहीं में दोहराती चली गई, हाथों के वर्जन से आने वाले को हटाती और बुलाती चली गई ..... पर हाथ किसे हटाकर बुला रहे थे? ..... आ रहा था वह चला गया था। उसकी पीठ फिर अब मेरी ओर थी और मुख सागर की ओर था।" इस तरह इला की एक ना से वह कई सालों तक अतृप्त रही तथा आगे न जाने कितने साल और बढ़े होंगे इला के अंतर्द्वंद्व के।

इला बिना विवाह किए जय के साथ रहने पर संस्कारवश वह अपराध बोध से ग्रसित है और स्वयं समर्पण कर उस अपराध भावना को पुष्ट कर अपनी ही नजरों में गिरना नहीं चाहती, अपितु बलात् जय द्वारा ग्रहण की जाने में ही अपराध मुक्ति देखती है। पर उसकी वर्जना को चेतावनी मान जय एकदम होश में आता है और फिर कभी ऐसा अवसर नहीं आने देता।

उद्यत् होने पर भी इला जय द्वारा ग्रहीत न हुई, इसमें इला को अपनी अवज्ञा प्रतीत होती है तथा अपमान अनुभव होता है। इस घटना के बाद इला को अपनी इस आंतरिक विवशता का सदा पछतावा रहा कि इस समर्पण में वह अपराध बोध से उभर क्यों न सकी; उसके बाद इला कई बार धृष्ट भी हुई और निर्लज्ज भी, पर न तो जय को छोड़ सकी और न भी उसे पा सकी। इस तरह कई वर्षों तक इला का अंतर्द्वंद्व पनपता रहा।

जैनेन्द्र जी ने त्रिकोणात्मक संबंध का ही वर्णन क्यों किया है इसका रहस्य समझ में आ गया है, उनके विचार – "हमारे पास प्रातः स्मरण के लिए पवित्र दो नामोच्चार हैं। एक सीता–राम दूसरा राधे–श्याम पहले पति–पत्नी हैं, दूसरे प्रेमी–प्रेमिका। कोई उनमें कम पवित्र नहीं है। और मैं यह मानता हूँ कि आप्त और अवतार–पुरुषों की ये दोनों जोड़ियाँ परस्पर विरोधक नहीं, पूरक हैं। लेकिन धरती उन दो ध्रुवों के बीच ही टिकी है। किसी एक के अभाव में दूसरे की स्थिति भी नहीं रहती।"

जैनेन्द्र जी पर शायद इसी का प्रभाव है इसलिए उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में पति और प्रेमी दोनों को नायक के रूप में प्रस्तुत किया है। लेकिन समस्या यह है कि उनकी स्त्री पात्र, पत्नी और प्रेमिका अलग–अलग न होकर एक ही है। यही समस्या उनकी नायिकाओं के अंतर्द्वंद्व का कारण है। यह अंतर्द्वंद्व खत्म या कम हो सकता था यदि पति अपनी पत्नी की उच्छृंखल स्वतंत्रता का विरोध करता, नजरांदाज न करता, तो शायद पत्नी को फैसला करने में आसानी होती। मगर पति की उदारता, विश्वास व संस्कार उसे और भी अधिक अंतर्मन की ओर धकेलते जाते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः जैनेन्द्र जी एक मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार हैं। उन्होंने अपनी प्रमुख पात्र स्त्री के चेतन, अर्द्धचेतन और अचेतन सभी पहलुओं पर गहनता से अध्ययन किया है। उनकी स्त्री पात्र बहिर्गमन की स्थिति में है जो अपनी अर्द्धावस्था के कारण अंतर्द्वंद्व में उलझी हुई है। उसमें पतिपरायणता की भावना भी है और स्वतंत्र प्रेम की पिपासा भी। वह पति का स्वामित्व भी चाहती है और स्वतंत्र व्यक्तित्व की चाह भी रखती है। अपने पत्नीत्व का दावा करती है और प्रेमी की ओर आकर्षित भी होती है। वह परम्परा को छोड़े बिना आधुनिकता को अपनाना चाहती है। यही स्थितियाँ उसे अंतर्द्वंद्व से बाहर नहीं आने देती हैं। इस तरह जैनेन्द्र के उपन्यासों में स्त्री पात्र उलझकर रह गई है। उन्होंने स्त्री को पंख तो दिए लेकिन उड़ने की इजाजत नहीं दी।

सन्दर्भ सूची

1.जैनेन्द्र कुमार – काम प्रेम और परिवार, पृ.सं.– 666, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, सं0 2005
2.वही – अनाम स्वामी, पृ.सं.– 154, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1991
3.वही – सुनीता, पृ.सं.– 130, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2005
4.वही – व्यतीत, पृ.सं. – 84, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2002
5.वही – समय और हम, पृ.सं.– 527, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली
6.डॉ. शकुन्तला शर्मा – जैनेन्द्र की कहानियाँ : एक मूल्यांकन, पृ.सं. 23, अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 1978
7.जैनेन्द्र कुमार – विवर्त, पृ.सं. 21, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1994
8ण्जैनेन्द्र कुमार – सुखदा, पृ.सं. 94, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2002
9.रामरतन भटनागर – जैनेन्द्र, साहित्य और समीक्षा, पृ.सं. 119, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1958

10.जैनेन्द्र कुमार – त्यागपत्र, पृ.सं. 42, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली
11.वही – कल्याणी, पृ.सं. 53, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2002
12.वही – जयवर्धन, पृ.सं. 93, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1973
13.वही – प्रेम और विवाह, पृ.सं. 53, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2002

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net